

## ब्राह्मणी और नेवला

एक बार देवशर्मा नाम के ब्राह्मण के घर जिस दिन पुत्र का जन्म हुआ उसी दिन उसके घर में रहने वाली नकुली ने भी एक नेवले को जन्म दिया। देवशर्मा की पत्नी बहुत दयालु स्वभाव की स्त्री थी। उसने उस छोटे नेवले को भी अपने पुत्र के समान ही पाल-पोसा और बड़ा किया। वह नेवला सदा उसके पुत्र के साथ खेलता था। दोनों में बड़ा प्रेम था। देवशर्मा की पत्नी भी दोनों के प्रेम को देखकर प्रसन्न थी। किन्तु, उसके मन में यह शंका हमेशा रहती थी कि कभी यह नेवला उसके पुत्र को न काट खाये। पशु के बुद्धि नहीं होती, मूर्खतावश वह कोई भी अनिष्ट कर सकता है।

एक दिन उसकी इस आशंका का बुरा परिणाम निकल आया। उस दिन देवशर्मा की पत्नी अपने पुत्र को एक वृक्ष की छाया में सुलाकर स्वयं पास के जलाशय से पानी भरने गई थी। जाते हुए वह अपने पति देवशर्मा से कह गई थी कि वही ठहर कर वह पुत्र की देख-रेख करे, कहीं ऐसा न हो कि नेवला उसे काट खाये। पत्नी के जाने के बाद देवशर्मा ने सोचा, 'नेवले और बच्चे में गहरी मैत्री है, नेवला बच्चे को हानि नहीं पहुँचायेगा।' यह सोचकर वह अपने सोये हुए बच्चे और नेवले को वृक्ष की छाया में छोड़कर स्वयं भिक्षा के लोभ से कहीं चल पड़ा।

दैववश उसी समय एक काला नाग पास के बिल से बाहिर निकला। नेवले ने उसे देख लिया। उसे डर हुआ कि कहीं यह उसके मित्र को न डस ले, इसलिये वह काले नाग पर टूट पड़ा, और स्वयं बहुत क्षत-विक्षत होते हुए भी उसने नाग के खंड-खंड कर दिये।

सांप को मारने के बाद वह उसी दिशा में चल पड़ा, जिधर देवशर्मा की पत्नी पानी भरने गई थी। उसने सोचा कि वह उसकी वीरता की प्रशंसा करेगी, किन्तु हुआ इसके विपरीत।

उसकी खून से सनी देह को देखकर ब्राह्मण पत्नी का मन उन्हीं पुरानी आशङ्काओं से भर गया कि कहीं इसने उसके पुत्र की हत्या न कर दी हो। यह विचार आते ही उसने क्रोध से सिर पर उठाये घड़े को नेवले पर फेंक दिया। छोटा सा नेवला जल से भारी घड़े की चोट खाकर वही मर गया । ब्राह्मण-पत्नी वहाँ से भागती हुई वृक्ष के नीचे पहुँची। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि उसका पुत्र बड़ी शान्ति से सो रहा है, और उससे कुछ दूरी पर एक काले साँप का शरीर खँड-खँड हुआ पड़ा है। तब उसे नेवले की वीरता का ज्ञान हुआ। पश्चात्ताप से उसकी छाती फटने लगी।

इसी बीच ब्राह्मण देवशर्मा भी वहाँ आ गया। वहाँ आकर उसने अपनी पत्नी को विलाप करते देखा तो उसका मन भी सशंकित हो गया। किन्तु पुत्र को कुशलपूर्वक सोते देख उसका मन शान्त हुआ। पत्नी ने अपने पति देवशर्मा को रोते-रोते नेवले की मृत्यु का समाचार सुनाया और कहा- "मैं तुम्हें यहीं ठहर कर बच्चे की देख-भाल के लिये कह गई थी। तुमने भिक्षा के लोभ से मेरा कहना नहीं माना। इसी से यह परिणाम हुआ।

सीख : बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय।

## शाकुन्ती और नैवला

एक बार देवमन्त्र नाम के शाकुन्ती के अरिभ मित्र पुत्र का एतद्गुण उभी मित्र उभके अरि भेद करने वाली नकुली ने ही एक नैवले के एतद्गुण देवमन्त्र की पत्नी गुरुत दयालु भूराव की भी थी। उभने उभ के नैवले के ही अपने पुत्र के ममान की पाल-पेमा और गुरु किया। वरु नैवला मद्र उभके पुत्र के भाष पिलतु था। देवे भेदता प्रेम था। देवमन्त्र की पत्नी ही देवे के प्रेम के दायकर प्रभु थी। किन्तु, उभके मन मे वरु मंका रुमेमा रुरुती थी कि कही वरु नैवला उभके पुत्र के न काए पावो। पमु के वृद्धि नही देती, भुक्ततावम वरु केरे ही मनिष कर मकतु है।

एक मित्र उभकी उभ ममंका का वरु परिभम निकल मुया। उभ मित्र देवमन्त्र की पत्नी अपने पुत्र के एक वरु की काया मे भुला कर भुयं पाम के एला मय मे पानी रुने गरें थी। एते काल वरु अपने पति देवमन्त्र मे करु गरें थी कि वरु की उरु कर वरु पुत्र की दाय-दाय करे, कही रिमा न के कि नैवला उभे काए पावो। पत्नी के एने के गुरु देवमन्त्र ने भेदा, 'नैवले और गुरु मे गुरुती भेदी है, नैवला गुरु के कानि नही पकीयायेगा।' वरु भेदा कर वरु अपने भेवे काल गुरु और नैवले के वरु की काया मे केरुकर भुयं रिखा के लेरु मे कही गल पुरा।

देवमन्त्र उभी ममय एक काला नाग पाम के मिल मे गुरु निकला। नैवले ने उभे दाय लिया। उभे रुत रुमु कि कही वरु उभके भिद्र के न रुम ले, उभलिचे वरु काले नाग पर एए पुरा, और भुयं गुरुत रुत-विरुत देते काल ही उभने नाग के पंरु-पंरु कर दियो।

भाप के भारने के गुरु वरु उभी मिमा मे गल पुरा, एणर देवमन्त्र की पत्नी पानी रुने गरें थी। उभने भेदा कि वरु उभकी वीरता की प्रमंभा करेगी, किन्तु रुमु उभके विपरीत।

उभकी पुर मे मनी देरु के दायकर शाकुन्ती पत्नी का मन उनी पुरानी मुमए काउं मे रुत गया कि कही उभने उभके पुत्र की रुतु न कर दी है। वरु विदार मुते ही उभने केण मे भिर पर उावे अरु के नैवले पर दैक दिया। केए भा नैवला एल मे रुती अरु की गेए पाकर वरु भी भर गया। शाकुन्ती-पत्नी वरु मे रुगती रुत वरु के नीते पकीगी। वरु पकीकर उभने दाय कि उभका पुत्र गरी मात्रि मे भे रुता है, और उभमे कुळ रुती पर एक काले भाप का मरीर पिरु-पिरु रुमु पुरा है। उभ उभे नैवले की वीरता का हन रुमु। पुरा रूप मे उभकी काती दएने लगी।

उभी गीत शाकुन्ती देवमन्त्र ही वरु मु गया। वरु मुकर उभने अपनी पत्नी के विलाप करते दाय उे उभका मन ही ममंकिउ है गया। किन्तु पुत्र के कुमल प्रवक भेते दाय उभका मन मात्रु रुमु। पत्नी ने अपने पति देवमन्त्र के देते-देते नैवले की भद्र का ममाना भुनाया और कुरा- "मे रुमु, वरु की उरु कर गुरु की दाय-दाल के लिचे करु गरें थी। रुभने रिखा के लेरु मे भेदा करुना नही भाना। उभी मे वरु परिभम रुमु।

भीष : गिना विगारै ऐ करे भे पाके पळउया।

मनुवाए - पुगवा राए रु